जय हो, हे संसार, तुम्हारी!

जयहो,हे संसार,तुम्हारी!

जहाँ झुके हमवहाँ तनो तुम,
जहाँ मिटे हमवहाँ बनो तुम,
तुमजीतो उसठौरजहाँ परहमने बाज़ीहारी!
जयहो,हे संसार,तुम्हारी!

मानवकासचहो सपनासब,
हमें चाहिएऔरनकुछअब,
यादरहे हमको बसइतना-मानवजातिहमारी!
जयहो,हे संसार,तुम्हारी!

अनायासनिकलीयहवाणी,
यहनिश्चयहोगीकल्याणी,
जगको शुभाशीषदेने के हमदुखिया
अधिकारी!
जयहो,हे संसार,तुम्हारी!